



ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्परा

खुशबू मल्ल¹, डॉ. विश्वम्भर नाथ प्रजापति²

¹शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

¹Email: khushabumall2@gmail.com

²असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, उदित नारायण पीजी कॉलेज (यूएन पीजी कॉलेज), पडरौना-कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

²Email: vnathp@rediffmail.com

Received: 17 August 2026 | Accepted: 30 August 2026 | Published: 15 September 2026

Abstract (सारांश)

वैकल्पिक चिकित्सा से आशय उन उपचार पद्धतियों से है, जिनका उपयोग आधुनिक चिकित्सा के अतिरिक्त या कभी-कभी उसके स्थान पर स्वास्थ्य बनाए रखने और बीमारी से राहत पाने के लिए किया जाता है। इसमें यूनानी होम्योपैथी सिद्धा, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, जड़ी-बूटी आधारित उपचार, घरेलू उपचार और विभिन्न लोक-चिकित्सा पद्धतियाँ शामिल हैं। ग्रामीण समुदाय में इन उपचार पद्धतियों का संबंध केवल बीमारी के इलाज से नहीं, बल्कि परिवार से मिले ज्ञान, स्थानीय अनुभव, सामाजिक विश्वास और सांस्कृतिक परम्पराओं से भी जुड़ा होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, पारंपरिक चिकित्सा में विभिन्न संस्कृतियों से विकसित ज्ञान, कौशल और उपचार संबंधी प्रथाएँ शामिल हैं, जिनका उपयोग स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारियों की रोकथाम एवं उपचार के लिए किया जाता रहा है। समाजशास्त्री मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा के आधार पर देखा जाए तो किसी व्यक्ति द्वारा विशेष उपचार पद्धति को अपनाना उसके विश्वास, अनुभव और उस व्यवहार से जुड़े सामाजिक अर्थों से प्रभावित होता है। इसी दृष्टिकोण से यह अध्ययन ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं के स्वरूप, उपयोग और सामाजिक आधार को समझने का प्रयास करता है।

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित वर्णनात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन है। इसके लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों, WHO, आयुष मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) तथा अन्य विश्वसनीय प्रकाशित स्रोतों का अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि परिवार, समुदाय, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक विश्वास वैकल्पिक चिकित्सा के उपयोग को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। साथ ही, आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था के बढ़ते प्रभाव के बीच इन परम्पराओं की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों तथा इनके संरक्षण और विकास की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है।

मुख्य शब्द : वैकल्पिक चिकित्सा, ग्रामीण समुदाय, लोक चिकित्सा, पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक विश्वास

1. प्रस्तावना (Introduction)

ग्रामीण समुदाय में लोग स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए लोग लंबे समय से अलग-अलग उपचार पद्धतियों का उपयोग करते आए हैं। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के बढ़ने के बाद भी ग्रामीण जीवन में घरेलू उपचार, जड़ी-बूटियाँ, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा और लोक चिकित्सा, यूनानी होम्योपैथी सिद्धा जैसी परम्पराएँ आज भी देखने को मिलती हैं। कई परिवारों में बीमारी होने पर सबसे पहले घर में उपलब्ध चीजों से उपचार करने, जड़ी-बूटी का प्रयोग करने या परिवार के बुजुर्गों की सलाह लेने की परम्परा बनी हुई है। इसलिए वैकल्पिक चिकित्सा को केवल बीमारी के इलाज के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसे ग्रामीण समाज के पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक विश्वासों और सामुदायिक अनुभवों से जोड़कर समझना जरूरी है। वैकल्पिक चिकित्सा से सामान्य रूप से उन उपचार पद्धतियों को समझा जाता है, जिनका उपयोग आधुनिक चिकित्सा के अतिरिक्त या कभी-कभी उसके स्थान पर स्वास्थ्य बनाए रखने और बीमारी से राहत पाने के लिए किया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 2000 में प्रकाशित General Guidelines for Methodologies on Research and Evaluation of Traditional Medicine में पारंपरिक चिकित्सा को विभिन्न संस्कृतियों के ज्ञान, कौशल, विश्वासों और अनुभवों पर

आधारित स्वास्थ्य संबंधी पद्धतियों के रूप में समझाया है, जिनका उपयोग स्वास्थ्य को बनाए रखने तथा बीमारी की रोकथाम, पहचान और उपचार के लिए किया जाता है। वर्तमान में WHO पारंपरिक, पूरक और एकीकृत चिकित्सा को भी स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़ी विभिन्न ज्ञान-आधारित पद्धतियों के रूप में देखता है। एमिल दुर्खीम के पुस्तक *The Rules of Sociological Method* (1895) में दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य (Social Facts) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, विश्वास और व्यवहार व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण समाज में बीमारी और उपचार से जुड़े विश्वास, जैसे किसी विशेष जड़ी-बूटी को प्रभावी मानना या किसी पारंपरिक उपचारकर्ता पर भरोसा करना, इसी सामाजिक संदर्भ में समझे जा सकते हैं। इसी प्रकार मैक्स वेबर की पुस्तक *Economy and Society* (1922) में दी गई सामाजिक क्रिया (Social Action) की अवधारणा के आधार पर यह समझा जा सकता है कि व्यक्ति का उपचार संबंधी व्यवहार उसके विश्वास, अनुभव और उस व्यवहार से जुड़े अर्थों से प्रभावित होता है। इसलिए किसी व्यक्ति द्वारा घरेलू उपचार या लोक चिकित्सा को अपनाना केवल स्वास्थ्य संबंधी निर्णय नहीं, बल्कि उसके सामाजिक अनुभवों और विश्वासों से जुड़ी हुई क्रिया भी हो सकती है। टैल्कोट पार्सन्स ने अपने लेख “*Illness and the Role of the Physician: A Sociological Perspective*” (1951) तथा पुस्तक *The Social System* (1951) में बीमारी और उपचार को सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में समझाया। उनकी Sick Role (बीमार की भूमिका) की अवधारणा बताती है कि बीमारी की स्थिति व्यक्ति की सामाजिक भूमिका और उसके व्यवहार को प्रभावित करती है। ग्रामीण समाज में बीमारी के समय परिवार द्वारा उपचार का चुनाव और व्यक्ति की देखभाल भी इसी सामाजिक प्रक्रिया का हिस्सा मानी जा सकती है। इसके अलावा पियरे बोरदियू की पुस्तक *The Forms of Capital* (1986) में प्रस्तुत सांस्कृतिक पूँजी की अवधारणा के आधार पर पारंपरिक चिकित्सा संबंधी ज्ञान को एक प्रकार के सांस्कृतिक संसाधन के रूप में देखा जा सकता है। परिवार और समुदाय में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही जड़ी-बूटियों, घरेलू उपचारों और स्थानीय उपचार संबंधी जानकारी इसी प्रकार के ज्ञान का उदाहरण हो सकती है। ग्रामीण समाज में वैकल्पिक चिकित्सा का उपयोग कई कारणों से होता है। स्थानीय स्तर पर इसकी उपलब्धता, कम खर्च, पारिवारिक विश्वास, पुराने अनुभव, सामाजिक परम्पराएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ इसके उपयोग को प्रभावित कर सकती हैं। दूसरी ओर, आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था के विस्तार के कारण लोगों के सामने उपचार के नए विकल्प भी उपलब्ध हुए हैं। ऐसे में पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा के बीच संबंध को समझना भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives of Study)

1. ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं के स्वरूप को समझना।
2. ग्रामीण समाज में वैकल्पिक चिकित्सा के उपयोग को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा की वर्तमान स्थिति और प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करना।

3. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

- एमिल दुर्खीम ने अपनी पुस्तक *The Rules of Sociological Method* (1895) में सामाजिक तथ्य की अवधारणा दी। उनके अनुसार समाज में मौजूद विश्वास, रीति-रिवाज और व्यवहार व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करते हैं। इस आधार पर ग्रामीण समुदाय में किसी विशेष जड़ी-बूटी, घरेलू उपचार या पारंपरिक चिकित्सक पर विश्वास को सामाजिक तथ्य के रूप में समझा जा सकता है।
- मैक्स वेबर की पुस्तक *Economy and Society* (1922) में दी गई सामाजिक क्रिया की अवधारणा यह समझने में उपयोगी है कि व्यक्ति किसी व्यवहार को एक विशेष अर्थ और विश्वास के आधार पर अपनाता है। ग्रामीण लोगों द्वारा किसी पारंपरिक उपचार को अपनाने के पीछे उनके व्यक्तिगत अनुभव के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ भी जुड़े हो सकते हैं।
- टैल्कोट पार्सन्स ने *The Social System* (1951) में Sick Role की अवधारणा के माध्यम से बीमारी को सामाजिक व्यवस्था से जोड़ा। इस दृष्टिकोण से बीमारी की स्थिति में व्यक्ति की भूमिका, परिवार की प्रतिक्रिया और उपचार की तलाश को सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है।
- आर्थर क्लाइनमैन ने अपनी पुस्तक *Patients and Healers in the Context of Culture* (1980) में बीमारी और उपचार को संस्कृति के संदर्भ में समझाया। उन्होंने यह बताया कि अलग-अलग समाजों में लोग बीमारी के कारण और उपचार को अपने सांस्कृतिक अनुभवों के आधार पर अलग-अलग तरीके से समझते हैं। उनकी पुस्तक में परिवार आधारित स्वास्थ्य देखभाल और लोक चिकित्सकों की भूमिका पर भी चर्चा की गई है।

- आर्थर क्लाइनमैन का 1978 का शोध-पत्र Concepts and a Model for the Comparison of Medical Systems as Cultural Systems चिकित्सा प्रणालियों को सांस्कृतिक व्यवस्था के रूप में देखने पर जोर देता है। इसमें बीमारी, रोग के अनुभव, उपचार और सांस्कृतिक विश्वासों के बीच संबंध को समझाया गया है।
- एक्सल क्रोगर (Axel Kroeger) ने 1983 में प्रकाशित शोध-पत्र Anthropological and Socio-medical Health Care Research in Developing Countries में विकासशील देशों में लोगों के health-seeking behaviour पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि लोग पारंपरिक या आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग क्यों और किस प्रकार करते हैं, इसे समझने में सामाजिक परिस्थितियों और स्थानीय स्वास्थ्य संबंधी धारणाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने General Guidelines for Methodologies on Research and Evaluation of Traditional Medicine (2000) में पारंपरिक चिकित्सा के अध्ययन में उसकी सुरक्षा, प्रभावशीलता और वैज्ञानिक मूल्यांकन पर जोर दिया। WHO ने पारंपरिक चिकित्सा से जुड़े शोध के लिए व्यवस्थित और प्रमाण-आधारित अध्ययन की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना है।
- इसके बाद WHO ने 'WHO Traditional Medicine Strategy: 2014–2023' प्रकाशित की, जिसमें पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा के सुरक्षित और प्रभावी उपयोग, गुणवत्ता, नियमन तथा स्वास्थ्य व्यवस्था के साथ उचित एकीकरण पर जोर दिया गया।
- WHO Global Report on Traditional and Complementary Medicine 2019 में भी पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा को विश्व स्तर पर स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण, लेकिन कई बार कम आंका गया संसाधन बताया गया है। रिपोर्ट में विभिन्न देशों में इसकी स्थिति और स्वास्थ्य व्यवस्था में इसके उपयोग से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई है।
- हाल के संदर्भ में WHO ने 'Global Traditional Medicine Strategy' 2025–2034 को अपनाया है। इसमें पारंपरिक चिकित्सा के संबंध में शोध, प्रमाण, सुरक्षा, गुणवत्ता, समानता और स्वास्थ्य प्रणालियों के साथ उचित एकीकरण पर विशेष जोर दिया गया है।

इस प्रकार उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि वैकल्पिक चिकित्सा को केवल उपचार की एक पद्धति के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसके साथ ग्रामीण समाज की परम्पराएँ, सांस्कृतिक विश्वास, पारिवारिक ज्ञान, आर्थिक परिस्थितियाँ और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार जुड़े हुए हैं। हालांकि उपलब्ध साहित्य में पारंपरिक चिकित्सा के चिकित्सकीय और मानवशास्त्रीय पक्ष पर पर्याप्त चर्चा मिलती है, लेकिन ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं को विशेष रूप से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों के आधार पर एक साथ समझने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

अब तक उपलब्ध अध्ययनों में वैकल्पिक और पारंपरिक चिकित्सा के बारे में काफी जानकारी मिलती है। इनमें इसके स्वास्थ्य, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं पर चर्चा की गई है। लेकिन ग्रामीण समुदाय में लोग पारंपरिक उपचारों पर क्यों भरोसा करते हैं और परिवार व समाज का इसमें क्या योगदान है, इस पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। खासकर उपलब्ध द्वितीयक सामग्री के आधार पर इन सभी पहलुओं को एक साथ समझने वाले अध्ययन कम दिखाई देते हैं। इसलिए यह शोध ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं की वर्तमान स्थिति और उनके सामाजिक आधार को उपलब्ध साहित्य और रिपोर्टों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है।

4. शोध प्रश्न (Research Questions)

1. ग्रामीण समुदाय में कौन-कौन सी वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराएँ प्रचलित हैं?
2. ग्रामीण समाज में वैकल्पिक चिकित्सा के उपयोग के पीछे कौन-से सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण हैं?
3. आधुनिक चिकित्सा के बढ़ते प्रभाव के बीच ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा की वर्तमान स्थिति क्या है?

5. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित वर्णनात्मक एवं गुणात्मक अध्ययन है। इसमें किसी प्रकार का प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार या प्रश्नावली का प्रयोग नहीं किया गया है। अध्ययन के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी रिपोर्टों, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), आयुष मंत्रालय तथा अन्य विश्वसनीय प्रकाशित एवं ऑनलाइन स्रोतों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। उपलब्ध सामग्री को विषय के अनुसार व्यवस्थित करके ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा के स्वरूप, उपयोग, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार तथा वर्तमान स्थिति को समझने के लिए उसका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के साथ मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया, एमिल दुर्खीम के सामाजिक तथ्य और टैल्कोट पार्सन्स की Sick Role जैसी अवधारणाओं को भी संदर्भ के रूप में लिया गया है।

6. ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्परा के प्रमुख रूप, उपयोग एवं वर्तमान स्थिति

ग्रामीण समाज में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराएँ काफी समय से लोगों के जीवन का हिस्सा रही हैं। इनका ज्ञान सामान्यतः किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार और समुदाय के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। गाँवों में छोटी-मोटी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए घरेलू उपचार, जड़ी-बूटियों, आयुर्वेदिक दवाओं और लोक चिकित्सा का सहारा लिया जाता रहा है। कई बार लोग पहले घरेलू या पारंपरिक उपचार आजमाते हैं और आराम न मिलने पर आधुनिक चिकित्सा की ओर जाते हैं। इसलिए ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवहार को समझने में इन परम्पराओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। घरेलू उपचार और जड़ी-बूटी आधारित चिकित्सा ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक चिकित्सा का एक सामान्य रूप है। सर्दी-जुकाम, खाँसी, पेट की सामान्य समस्या या छोटी-मोटी चोट जैसी स्थितियों में लोग घर में उपलब्ध मसालों, पौधों और जड़ी-बूटियों का प्रयोग करते हैं। इस तरह का ज्ञान अक्सर बुजुर्गों और परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त होता है। इसमें स्थानीय अनुभव की बड़ी भूमिका होती है और उपचार की जानकारी लिखित स्रोतों की अपेक्षा मौखिक रूप से अधिक आगे बढ़ती है। लोक चिकित्सा और पारंपरिक चिकित्सक भी ग्रामीण समुदाय का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर ऐसे लोग मिलते हैं जिन्हें जड़ी-बूटियों, पारंपरिक उपचारों या कुछ विशेष बीमारियों के उपचार का अनुभव माना जाता है। लोग इनके पास केवल उपचार के लिए ही नहीं, बल्कि पुराने विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव के कारण भी जाते हैं। यहाँ यह समझना जरूरी है कि किसी उपचार पर भरोसा केवल उसकी चिकित्सकीय जानकारी पर निर्भर नहीं करता, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक संबंध और समुदाय में उस उपचार की स्वीकृति भी महत्वपूर्ण होती है। आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा का उपयोग भी ग्रामीण क्षेत्रों में धीरे-धीरे बढ़ा है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य को शरीर और जीवनशैली से जोड़कर देखा जाता है, जबकि योग और प्राकृतिक चिकित्सा में जीवनशैली, भोजन, व्यायाम और प्राकृतिक साधनों को महत्व दिया जाता है। भारत में आयुष व्यवस्था के विस्तार के कारण इन पद्धतियों के बारे में लोगों की जानकारी और पहुँच पहले की तुलना में बढ़ी है। धार्मिक और सांस्कृतिक उपचार भी ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवहार का एक हिस्सा रहे हैं। बीमारी की स्थिति में कई परिवार धार्मिक विश्वासों, पूजा-पाठ या स्थानीय मान्यताओं का सहारा लेते हैं। इन तरीकों को केवल चिकित्सा के नजरिए से देखना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इनके पीछे लोगों की सांस्कृतिक समझ और विश्वास जुड़े होते हैं। मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा के आधार पर ऐसे व्यवहारों को उनके पीछे मौजूद सामाजिक अर्थ और विश्वास के संदर्भ में समझा जा सकता है। वैकल्पिक चिकित्सा के उपयोग में परिवार और समुदाय की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। परिवार के बुजुर्गों से मिली जानकारी, पड़ोसियों का अनुभव और समुदाय में किसी उपचार के बारे में बनी धारणा व्यक्ति के उपचार संबंधी निर्णय को प्रभावित कर सकती है। एमिल दुर्खीम की सामाजिक तथ्य की अवधारणा के आधार पर देखा जाए तो समाज में प्रचलित विश्वास और व्यवहार व्यक्ति के निर्णयों को प्रभावित करने वाली सामाजिक शक्ति का काम कर सकते हैं। वैकल्पिक चिकित्सा का उपयोग सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से भी जुड़ा होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध उपचार कई बार लोगों को आसानी से मिल जाते हैं और उनका खर्च भी अपेक्षाकृत कम हो सकता है। इसके अलावा आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक दूरी, उपलब्धता और जानकारी की कमी भी उपचार के चुनाव को प्रभावित कर सकती है। हालांकि केवल आर्थिक कारणों से ही लोग वैकल्पिक चिकित्सा अपनाते हैं, ऐसा कहना उचित नहीं होगा; पारिवारिक विश्वास और पुराने अनुभव भी इसके महत्वपूर्ण आधार हैं। वर्तमान समय में ग्रामीण समुदाय में आधुनिक और वैकल्पिक चिकित्सा दोनों का उपयोग देखने को मिलता है। लोग कई परिस्थितियों में अस्पताल और आधुनिक दवाओं का सहारा लेते हैं, जबकि कुछ सामान्य समस्याओं में घरेलू या पारंपरिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं। इस तरह दोनों चिकित्सा पद्धतियों के बीच पूरी तरह विरोध की स्थिति नहीं है, बल्कि कई बार लोग अपनी आवश्यकता और अनुभव के अनुसार दोनों का उपयोग करते हैं। फिर भी वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं के सामने कुछ चुनौतियाँ हैं। पारंपरिक ज्ञान का लिखित रूप में सुरक्षित न होना, नई पीढ़ी में इसकी जानकारी का कम होना, उपचार की वैज्ञानिक जाँच का अभाव और गलत जानकारी के फैलने की संभावना प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसलिए इन परम्पराओं का अध्ययन करते समय उनके सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ उपचार की सुरक्षा और प्रभावशीलता को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा केवल उपचार का माध्यम नहीं, बल्कि वहाँ के सामाजिक जीवन और पारंपरिक ज्ञान का भी हिस्सा है। आधुनिक चिकित्सा के विस्तार के बावजूद इसका महत्व पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। भविष्य में इन परम्पराओं को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने, उपयोगी पारंपरिक ज्ञान को सुरक्षित रखने और सुरक्षित उपचार के संबंध में लोगों को सही जानकारी देने की आवश्यकता है।

7. अवलोकन एवं विश्लेषण (Observation and Analysis)

उपलब्ध द्वितीयक साहित्य, शोध-पत्रों, पुस्तकों और WHO तथा अन्य संस्थाओं की रिपोर्टों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराएँ आज भी स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन परम्पराओं का संबंध केवल बीमारी

के उपचार से नहीं, बल्कि परिवार, सामाजिक विश्वास, स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक अनुभवों से भी है। ग्रामीण समाज में घरेलू उपचार, जड़ी-बूटियों, आयुर्वेद और लोक चिकित्सा जैसी पद्धतियों का उपयोग लंबे समय से होता आया है और इनका ज्ञान प्रायः परिवार के बुजुर्गों तथा समुदाय के माध्यम से आगे बढ़ता है। साहित्य के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि वैकल्पिक चिकित्सा को अपनाने के पीछे कई कारण एक साथ काम करते हैं। स्थानीय स्तर पर उपचार की उपलब्धता, कम खर्च, पारिवारिक अनुभव और किसी उपचार से पहले मिले लाभ के कारण लोगों का विश्वास मजबूत हो सकता है। इसके साथ ही सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ भी उपचार के चुनाव को प्रभावित करती हैं। मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा के आधार पर इसे समझें तो किसी उपचार को अपनाना केवल स्वास्थ्य संबंधी निर्णय नहीं, बल्कि व्यक्ति के विश्वास और उसके सामाजिक अनुभवों से जुड़ा व्यवहार भी है। एमिल दुर्खीम के सामाजिक तथ्य के विचार से देखा जाए तो परिवार और समुदाय में लंबे समय से चले आ रहे उपचार संबंधी विश्वास व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। वहीं पियरे बोरदियू की सांस्कृतिक पूँजी की अवधारणा के आधार पर पारंपरिक चिकित्सा का ज्ञान परिवार और समुदाय में मौजूद एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संसाधन माना जा सकता है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा के बढ़ते प्रभाव के बावजूद वैकल्पिक चिकित्सा का उपयोग पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। कई लोग आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार आधुनिक चिकित्सा के साथ घरेलू या पारंपरिक उपचार का भी सहारा लेते हैं। हालांकि इसके सामने पारंपरिक ज्ञान के धीरे-धीरे कम होने, वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी, गलत जानकारी और उपचार की सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इसलिए उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा को समझने के लिए उसके सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ उसकी सुरक्षा, प्रभावशीलता और आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्था के साथ संबंध को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

8. निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion and Suggestions)

उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराएँ आज भी स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। घरेलू उपचार, जड़ी-बूटी, आयुर्वेद और लोक चिकित्सा का संबंध पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक विश्वास और सांस्कृतिक अनुभवों से जुड़ा हुआ है। आधुनिक चिकित्सा के विस्तार के बावजूद इन परम्पराओं का उपयोग पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इसलिए ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को समझने में वैकल्पिक चिकित्सा परम्पराओं के सामाजिक महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

9. सुझाव (Suggestions)

पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण और वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए। ग्रामीण लोगों को वैकल्पिक चिकित्सा के सुरक्षित और सही उपयोग के बारे में जागरूक किया जाए तथा उपयोगी परम्पराओं और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं के बीच उचित समन्वय को बढ़ावा दिया जाए।

संदर्भ सूची (References)

- [1]. Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. G. Richardson (Ed.), Handbook of theory and research for the sociology of education (pp. 241–258). Greenwood.
- [2]. Durkheim, E. (1895). The rules of sociological method. The Free Press.
- [3]. Kleinman, A. (1978). Concepts and a model for the comparison of medical systems as cultural systems. Social Science & Medicine. Part B: Medical Anthropology, 12(2), 85–93.
- [4]. Kleinman, A. (1980). Patients and healers in the context of culture: An exploration of the borderland between anthropology, medicine, and psychiatry. University of California Press.
- [5]. Kroeger, A. (1983). Anthropological and socio-medical health care research in developing countries. Social Science & Medicine, 17(3), 147–161. [https://doi.org/10.1016/0277-9536\(83\)90248-4](https://doi.org/10.1016/0277-9536(83)90248-4)
- [6]. Parsons, T. (1951). The social system. The Free Press.
- [7]. World Health Organization. (2000). General guidelines for methodologies on research and evaluation of traditional medicine. World Health Organization.
- [8]. World Health Organization. (2013). WHO traditional medicine strategy: 2014–2023. World Health Organization.
- [9]. World Health Organization. (2019). WHO global report on traditional and complementary medicine 2019. World Health Organization.

- [10]. World Health Organization. (2025). Global traditional medicine strategy 2025–2034. World Health Organization.
- [11]. Weber, M. (1922). Economy and society: An outline of interpretive sociology. University of California Press.
- [12]. World Health Organization. (2002). WHO traditional medicine strategy 2002–2005. World Health Organization.
- [13]. World Health Organization. (2023). Extension of the WHO traditional medicine strategy: 2014–2023 to 2025. World Health Organization.
- [14]. Kroeger, A. (1983). Anthropological and socio-medical health care research in developing countries. *Social Science & Medicine*, 17(3), 147–161.

Cite this Article:

खुशबू मल्ल, & डॉ. विश्वम्भर नाथ प्रजापति. (2026). ग्रामीण समुदाय में वैकल्पिक चिकित्सा परम्परा. *International Journal of Humanities, Commerce and Education*, 2(9), 63–68.

Journal URL: <https://ijhce.com/> **DOI:** <https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i9.129>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.